हिंदी भाषा

6th Sem Hons DSC 3 unit -1

Hindi Bhasha

(इकाई लेखिका संयोगिता वर्मा**)**

"भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। "

भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ है - बोलना या कहना। विभिन्न भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा को कई रूपों में परिभाषित किया है जो निम्नलिखित है: -

1. डॉ श्याम सुंदर दास के अनुसार, " भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली -भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्ट समझ सकते हैं"।

2 . आचार्य कामता प्रसाद गुरु के अनुसार," जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार- विनिमय करता है , उसको समाष्टि रूप से भाषा कहते हैं"।

3. प्लेटों ने कहा, " विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं"।

4. स्वीट के अनुसार ," ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है"।

5. ब्लॉक तथा ट्रेगर ने कहा, "A language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a society group cooperates."

6. सुतवों के अनुसार, "A language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which members of social group cooperate and interact."

अर्थात इन सभी परिभाषाओं से हमें यह विदित होता है की भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भावों और अपने विचारों को एक दूसरे से आदान- प्रदान करने में सक्षम होते हैं। जिस प्रकार मानव जीवन में भाषा अति आवश्यक साधन है, ठीक इसी प्रकार भाषा की कुछ विशेषताएं होती है ।

भाषा की विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकट कर सकते हैं :–

1) भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है:- कुछ लोगों का मानना है की भाषा पैतृक संपत्ति की भाँति अनायास ही प्राप्त होती है । किन्तु यथार्तता ऐसी बात नहीं है । यदि किसी भारतीय बच्चे को दो एक वर्ष की अवस्था में फ्रांस में पाला जाये तो वह न तो हिंदी ही समझ पायेगा और ना तो फ्रेंच ही उसकी मातृभाषा होगी। इस प्रकार भाषा पैतृक संपत्ति नहीं हो सकती।

2) भाषा अर्जित संपत्ति है:- ऊपर के उदाहरण से यह स्पष्ट हो चुका है की भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है अगर होती तो कोई भी भारतीय विदेशों की भाषा नहीं सीख़ सकते। व्यक्ति जिस वातावरण या माहौल में रहता है वह वहीँ की भाषा भी सीख़ लेता है। भाषा लोगों से अर्जित की जाती है।

3) भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है:- मनुष्य अनुकरण के द्वारा ही किसी भाषा को सीख सकता है। किसी को देखकर ही कोई बच्चा या व्यक्ति किसी भी भाषा को अनुकरण यानि नक़ल के माध्यम से सीख सकता है।

4) भाषा चिरपरिवर्तनशील है:- चूँकि भाषा अनुकरण के द्वारा सीखी जाती है । इसलिए जब हम किसी भाषा को सीखते हैं तो हमसे अनुकरण करने में कुछ चीजें पूर्ण रूप से नहीं हो पाती है और उस भाषा के कुछ शब्द या ध्वनि बदल जाती है और इस प्रकार प्रयुक्त भाषा में कुछ परिवर्तन आ जाता है। इस प्रकार भाषा चिरपरिवर्तनशील है ।

5) प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना अलग होती है:- किसी भी दो भाषाओं का ढाँचा पूर्णतया एक नहीं होता। उनमें शब्द, ध्वनि, रूप, वाक्य या अर्थ आदि में किसी भी एक स्तर पर या एक से अधिक स्तरों पर संरचना या ढाँचें में अंतर अवश्य होता है ।

6) प्रत्येक भाषा की एक भौगोलिक सीमा होती है:- हर भाषा की अपनी भौगोलिक सीमा होती है । सीमा के भीतर ही उस भाषा का अपना वास्तविक क्षेत्र भी होता है।

7) भाषा एक व्यवस्था है :- भाषा में चार व्यवस्था होती है। स्वन व्यवस्था, रूप व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था और व्याकरण व्यवस्था । भाषा में शब्द के लिए ध्वनियों का और वाक्य के लिए पदों का एक निश्चित क्रम होता है, जो उस समाज को स्वीकृत हो। वक्ता अपने अनुभव क्षेत्र से बाहर के लिए ध्वनि -क्रम या शब्द- क्रम को स्वीकार नहीं कर सकता।

8) भाषा में उत्पादन क्षमता होती है:- भाषा की उत्पादन क्षमता या सर्जनात्मक क्षमता का अर्थ है कि हम परिमित ध्वनियों की सहायता से परिमित वाक्य निर्माण कर सकते हैं और उन्हें समझ सकते हैं। यह कार्य भी हम सहजता से और बिना किसी चिंतन के भी कर सकते हैं। हम ऐसा नवीन वाक्य भी बना सकते हैं जिसे हमने न कभी पढ़ा हो, ना कभी सुना हो।

व्याकरण

व्याकरण :- बोलने और लिखने में भाषा के कुछ नियमों को मानना पड़ता है। इन नियमों के संग्रह को व्याकरण कहते हैं । अतएव व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोलना, लिखना सीखते हैं। भाषा द्वारा विचारों को व्यक्त किया जाता है और व्याकरण भाषा को शुद्ध करता है। व्याकरण के बिना किसी भी वाक्य रचना के शब्दों का गठन संभव नहीं है। इसका महत्व हम निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा व्यक्त कर सकते हैं :-

- व्याकरण भाषा की शुद्धता का साधन है साध्य नहीं ।
- व्याकरण भाषा के स्वरुप की सार्थक व्यवस्था है ।
- गद्य साहित्य का आधार ही व्याकरण है।
- व्याकरण भाषा के शुद्ध एवं अशुद्ध प्रयोगों पर ध्यान देता है ।

भाषा और व्याकरण का सम्बन्ध आँखों का जो सम्बन्ध ज्योति से है, वही है। व्याकरण वह विधा है जिसके द्वारा शुद्ध बोलना या लिखना जाना जाता है। व्याकरण भाषा की व्यवस्था को बनाये रखने का काम करता है। यह भाषा का शुद्ध और अशुद्ध प्रयोगों पर ध्यान देता है। प्रत्येक भाषा के अपने नियम होते हैं। उस भाषा का व्याकरण, भाषा को शुद्ध लिखना व बोलना सिखाता है। वह भाषा में उच्चारण शब्द- प्रयोग, वाक्य-गठन तथा अर्थों के प्रयोग के रूप को निश्चित करता है।
व्याकरण के तीन अंग निर्धारित किये गए हैं:-१) वर्ण विचार (Phonology) २) शब्द विचार (Morphology) ३) वाक्य विचार (Syntax)।

वर्ण विचार - इसके अंतर्गत अक्षर ज्ञान उसके भेद , उच्चारण स्थान तथा उसके आपसी सम्बन्ध के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। भाषा में प्रयोग की जाने वाली सबसे छोटी इकाई को वर्ण या अक्षर कहते हैँ। जैसे- क , च , र आदि ।

शब्द विचार- इसके अंतर्गत शब्दों की उत्पत्ति, उनके भेद तथा उनकी रचना आदि का अध्ययन-विवेचन किया जाता है । वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। जैसे - कमल, नदी, नगर, आदि ।

वाक्य विचार - इसके अंतर्गत वाक्यों के भेद ,शब्दों की उचित अवस्था तथा वाक्यों का विश्लेषण करना बतलाया जाया जाता है।